बाल-मन : नन्ही कलम, बड़े सपने

(Child's Mind: Tiny Pen, Big Dreams)

श्री शेखर यादव (सहायक अध्यापक)
कंपोजिट विद्यालय रामसारी, विकास खण्ड – पतारा,
जनपद – कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य –

इस नवाचार का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अपनी कल्पनाओं, भावनाओं और रचनात्मक विचारों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने के लिए एक सृजनात्मक मंच प्रदान करना है। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- **पुस्तकालय के प्रति रुचि जगाना:** विद्यार्थियों में पुस्तकों के प्रति प्रेम एवं पठन की आदत विकसित करना तथा पुस्तकालय को उनके आकर्षण एवं सीखने का केंद्र बनाना।
- **मौलिकता और सृजनात्मकता का विकास:** रटने की प्रवृत्ति से हटकर विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, कलात्मक क्षमता, मौलिक चिंतन एवं लेखन कौशल को विकसित करना।
- **स्थानीय भाषा का सम्मान:** विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति में स्थानीय भाषा व बोलियों के प्रयोग को बढ़ावा देना, जिससे वे बिना किसी संकोच के अपनी बात लिख सकें।
- **राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 का क्रियान्वयन:** एनईपी-2020 की भावना के अनुरूप विद्यार्थियों के भाषाई कौशल, स्थानीय भाषा का प्रयोग, कला-एकीकृत शिक्षा और समग्र विकास को धरातल पर लाना।

क्रियान्वयन –

शिक्षक द्वारा वर्ष 2023 में 'बाल-मन' नाम से इस नवाचार की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत प्रतिदिन प्रार्थना सभा के दौरान कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को स्वरचित एवं मौलिक **कविता, कहानी और संस्मरण** लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है। विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा, स्थानीय भाषा एवं ग्रामीण बोलियों में अपने विचारों और अनुभवों को सहज रूप से कागज पर अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

विद्यार्थियों को समूहों में पुस्तकालय का भ्रमण कराया जाता है। वहाँ वे विभिन्न प्रकार की ज्ञानवर्धक, रोचक एवं सचित्र पुस्तकों को छूकर देखते, पढ़ते और उनके साथ सहज जुड़ाव महसूस करते हैं। पुस्तकों से यह जुड़ाव उनके भीतर **"मैं भी कुछ नया लिख सकता हूँ"** की जिज्ञासा उत्पन्न करता है। इस जिज्ञासा को रचनात्मकता में बदलने के लिए विद्यार्थियों को उनके रोजमर्रा के जीवन और भावनाओं से जुड़े बेहद सरल विषय दिए जाते हैं जैसे- नाना-नानी के साथ बिताई छुट्टियाँ, गाँव का मेला, विद्यालय का कोई रोचक अनुभव, जीवन की कोई उपलब्धि या अपनी कल्पना से बुनी कविता या कहानी। इससे लेखन विद्यार्थियों के लिए बोझ न होकर **आनंद और अभिव्यक्ति का माध्यम** बन जाता है।

इस नवाचार की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि विद्यार्थियों पर शुद्ध व्याकरण अथवा कठिन भाषा का कोई अनावश्यक दबाव नहीं डाला जाता। वे अपनी **मातृभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय बोली** में स्वतंत्र रूप से लिख सकते हैं। इससे उनके मन का भाषाई संकोच दूर होता है और वे अपने अनुभवों एवं भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने लगते हैं।

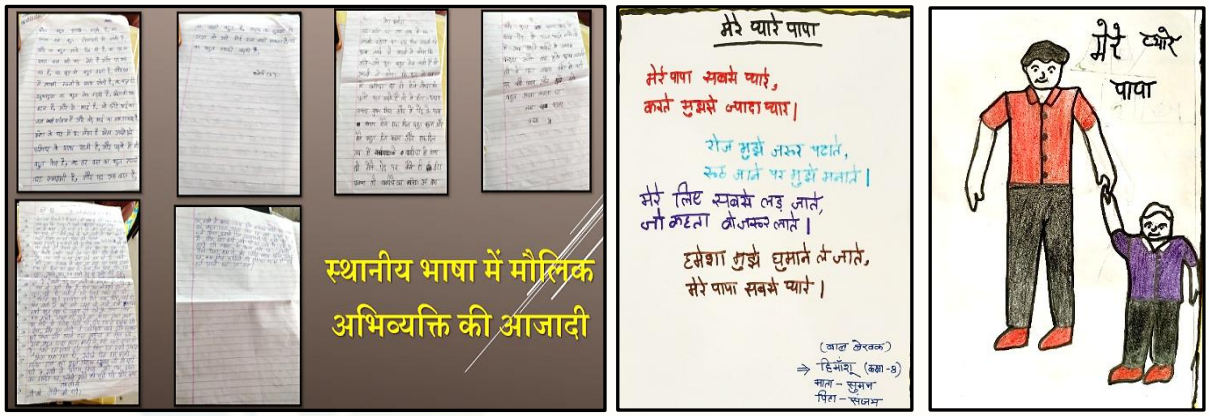

(विद्यार्थियों की मौलिक रचनाएँ एवं चित्र)

विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं का प्राथमिक स्तर पर अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जाता है। मौलिक एवं प्रभावी रचनाओं का चयन कर संबंधित विद्यार्थियों के साथ संवाद किया जाता है। उनकी रचना की मूल भावना को बनाए रखते हुए भाषा एवं वर्तनी में आवश्यक सुधार हेतु सुझाव दिए जाते हैं। इसके बाद चयनित विद्यार्थियों को अपनी कहानी या कविता के भाव के अनुरूप **चित्र बनाने एवं उनमें रंग भरने** के लिए प्रेरित किया जाता है। विद्यार्थियों की हस्तलिखित रचनाओं एवं बनाई गई चित्रकारी को चार्ट पेपर पर आकर्षक ढंग से सजाकर विद्यालय के पुस्तकालय में **'दीवार पत्रिका'** के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। जब विद्यार्थी अपनी रचना को अपने नाम के साथ दीवार पत्रिका पर प्रदर्शित देखते हैं, तो उनमें उपलब्धि की भावना उत्पन्न होती है। साथ ही अन्य विद्यार्थियों में भी अपनी रचना प्रदर्शित करने की **स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं रचनात्मक प्रेरणा** विकसित होती है।

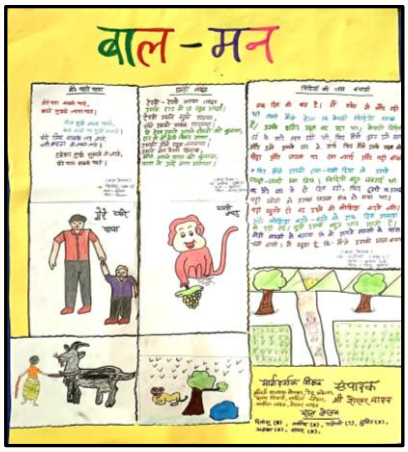

('बाल-मन' दीवार पत्रिका)

शिक्षक ने इस नवाचार की सफलता को देखते हुए इसे केवल एक विद्यालय तक सीमित न रखकर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की मदद से प्रदेश के अन्य जनपदों के ऊर्जावान शिक्षकों को जोड़ा गया ऑनलाइन बैठकों के माध्यम से शिक्षकों के साथ **'बाल-मन'** के उद्देश्य, प्रक्रिया एवं महत्व को साझा किया गया। मार्गदर्शक शिक्षकों ने अपने-अपने विद्यालयों में इस प्रक्रिया को अपनाया और विद्यार्थियों को रचनात्मक लेखन एवं चित्रकारी के लिए प्रेरित किया।

इस पहल के बाद एक व्यवस्थित डिजिटल नेटवर्क तैयार किया गया। विभिन्न विद्यालयों के बच्चों की **मूल हस्तलिखित रचनाओं एवं उनकी बनाई चित्रकारी** की उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें शिक्षकों द्वारा डिजिटल माध्यम से संकलित की जाने लगीं। इन रचनाओं को संकलित कर **'बाल-मन' वार्षिक पत्रिका** का निर्माण किया गया। इस प्रकार ICT के प्रभावी उपयोग ने एक छोटे से ग्रामीण विद्यालय की पहल को **प्रदेश स्तरीय रचनात्मक मंच** का स्वरूप प्रदान किया।

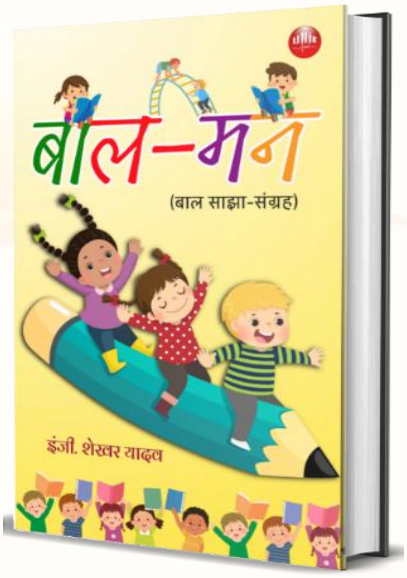

('बाल-मन' पत्रिका)

यह तकनीकी समावेशन ही था जिसने एक छोटे से ग्रामीण स्कूल की पहल को एक प्रदेश स्तरीय आंदोलन बना दिया। अब तक **40 जनपदों के 250 से अधिक विद्यार्थी** इस पहल से जुड़कर अपनी मौलिक रचनाओं के माध्यम से **बाल लेखक एवं बाल कलाकार** के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं।

('बाल-मन' पत्रिका में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित प्रमाण पत्र)

प्रभाव -

इस नवाचार के परिणाम अत्यंत उत्साहजनक एवं प्रेरणादायक रहे हैं :-

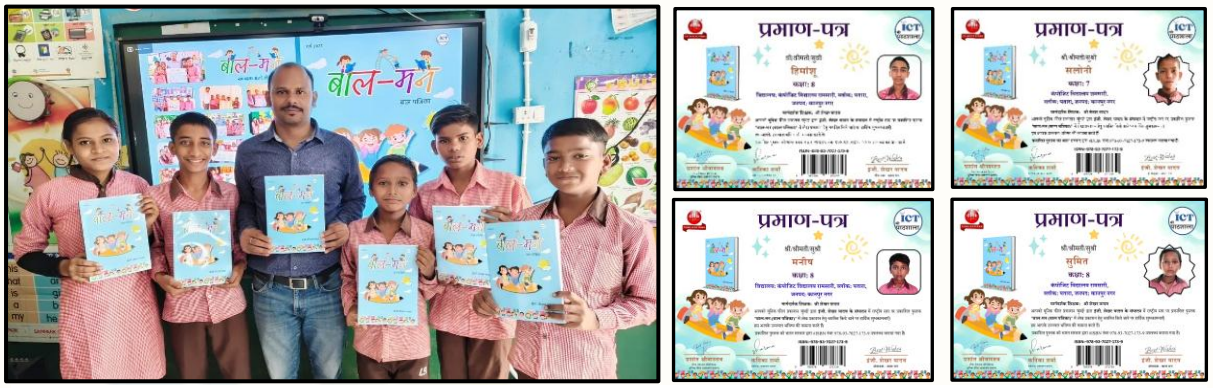

- **व्यापक सहभागिता:** 'बाल-मन' पत्रिका के विभिन्न संस्करणों में 40 जनपदों के 250 से अधिक विद्यार्थियों की मौलिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।
- **आत्मविश्वास में अभूतपूर्व वृद्धि:** विद्यार्थियों ने जब रंगीन पत्रिका के पन्नों पर अपना नाम और अपनी लिखी हुई रचना देखी, तो उनके आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं उपलब्धि-बोध में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- **वैश्विक मंच और सम्मान:** बाल दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों को उनकी प्रकाशित रचनाओं की पुस्तक प्रति एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया, जिससे उनमें आगे भी सृजन करने की प्रेरणा बढ़ी।
- **सकारात्मक शैक्षिक वातावरण:** विद्यालयों में पुस्तकालय के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण बदला। वे अब केवल पुस्तकें पढ़ने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि स्वयं कहानी, कविता एवं संस्मरण लिखने के लिए भी प्रेरित होते हैं।
- **समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख:** विद्यार्थियों की मौलिक रचनाओं को प्रमुख समाचार पत्रों में भी स्थान मिलने लगा, जिससे उन्हें व्यापक मंच और पहचान प्राप्त हुई।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com — अपना कानपुर

बच्चों के मन को खूब भाने लगी पत्रिका 'बाल मन'

पुस्तक दिवस

■ मोहम्मद आसिम सिद्दीकी

कानपुर। शिक्षा में नवाचार पर सबसे ज्यादा जोर है। पढ़ने और पढ़ाने में इसका उपयोग किया जा रहा है। इसके सार्थक परिणाम भी सामने आने लगे हैं। इन नवाचारों में कोशिश यही की गई है कि बच्चे खुद रुचि लेकर पढ़ें। बच्चों पर दवाब डालकर उन्हें पढ़ाया न जाए। शहर के एक परिषदीय शिक्षक ऐसे हैं जिन्होंने बच्चों के लिए 'बाल मन' पत्रिका निकाली। इसे पूरे प्रदेश में सराहना मिली है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय रामसारी के सहायक शिक्षक शेखर यादव कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंजीनियरिंग से बीटेक हैं। उन्होंने अपनी क्षमताओं का उपयोग पहले विभागीय वेबसाइट तैयार कराने में सहायक के रूप में किया, फिर प्रदेश स्तर पर कम्प्यूटर की पढ़ाई के लिए जो सिलेबस व पुस्तकें तैयार हुई उसमें अहम भूमिका निभाई। वह प्रदेश में परिषद की आईसीटी सेल में प्रशिक्षक भी हैं।

इसलिए मन भा गई 'बाल मन' : शेखर ने 'बाल मन' पहले प्रत्येक माह के लिए प्लान की थी लेकिन इसकी शुरुआत विशेष की जानी थी। ऐसे में प्रदेश भर के 62 से अधिक परिषदीय स्कूलों के बच्चों का चयन किया गया। इन बच्चों के लिए एक मार्गदर्शक शिक्षक तय किया गया। बच्चों ने अपने अनुभव अपनी भाषा में लिखे। बच्चों को बता दिया गया था कि वह जो भाषा घर में बोलते हैं उसी में अपना अनुभव लिखें। ऐसे सभी बच्चों के अनुभव 'बाल मन' में साझा किए गए। परिषदीय स्कूलों की लाइब्रेरी में बच्चों ने इस पत्रिका को सर्वाधिक पसंद किया।

दिल्ली के स्कूलों तक पहुंची पत्रिका : शेखर की यह पत्रिका बिना औपचारिक विमोचन के दिल्ली में लगे पुस्तक मेले में रखी गई। यहां दिल्ली के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों ने सबसे ज्यादा पसंद किया। उन स्कूलों तक 'बाल मन' पहुंच गई। इसकी विशेषता क्षेत्रीय भाषा है जिसमें बच्चों ने स्वयं मौलिक रचनाएं लिखी हैं। इसे नई शिक्षा नीति से भी जोड़ कर देखा जा रहा है।

बना रहे डिजिटल साक्षर

शेखर ने परिषदीय स्कूलों में शुरू की गई कम्प्यूटर शिक्षा में विशेष भूमिका निभाई है। वह औपचारिक-अनौपचारिक रूप से शिक्षकों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। डिजिटल तकनीक का उपयोग कर वह एक लाख शिक्षकों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। ऑफलाइन माध्यम से वह दो हजार शिक्षकों को डिजिटल साक्षर संग कम्प्यूटर पढ़ाने का प्रशिक्षण दे चुके हैं।

गणित को प्रकृति से जोड़ा

कटरी शंकरपुर सराय (अंग्रेजी माध्यम) की प्रधानाध्यापिका नीलम सिंह ने बच्चों को पढ़ाने में नेचर का उपयोग किया है। उन्होंने जो पुस्तिकाएं तैयार की उसमें बच्चे रुचि लेते हैं। बच्चों को भाषा और गणित पढ़ाने के लिए नेचर से जुटाई चीजों से खेल तैयार किए गए हैं। बिठूर के प्राथमिक विद्यालय ने गांव का उपयोग ही बच्चों को पढ़ाने पर कर लिया।

डिजिटल के दौर में मनपसंद पुस्तकें

डिजिटल दौर ने सभी को मनपसंद पुस्तकें पढ़ने का मौका दे दिया है। एक समय था जब किताबें दूर दराज से तलाश कर पैसा खर्च कर लाई जाती थीं। तब लोग शेयरिंग से उसे पढ़ा करते थे। वर्तमान में डिजिटल दुनिया में आप सर्च इंजन से मनचाहा साहित्य तलाश सकते हैं। मुफ्त में या सीमित धन देकर पढ़ सकते हैं। डिजिटल ने पढ़ना पढ़ाना आसान कर दिया है।

'बाल मन' एक शुरुआत है जिसने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना ली है। भविष्य में ऐसी पत्रिका हर दो माह में बच्चों के पास होगी। इससे पहले पर्यावरण मित्र पुस्तक भी बच्चों को काफी दिशा दे चुकी है। बच्चे जो विषय जैसे पढ़ना चाहें वैसी ही पुस्तकें और पढ़ाने का अंदाज कारगर साबित हो सकता है।
-शेखर यादव, उच्च प्राथमिक विद्यालय रामसारी के सहायक

पतारा

राष्ट्रीय पुस्तक बाल मन में हिमांशु की कविता प्रकाशित, लिखेंगे किताब

कंपोजिट विद्यालय रामसारी के कक्षा आठ के छात्र हिमांशु सिंह की लेखन में खास रूचि है। कक्षा के दौरान वह अक्सर कविताएं और विभिन्न विषयों पर लेख लिखा करते। उनकी इसी आदत ने उन्हें बाल लेखक बना दिया। राष्ट्रीय पुस्तक बाल मन में हिमांशु की कविता मेरे पापा प्रकाशित हो चुकी है। उनके पिता मनरेगा मजदूर हैं और परिवार में दो भाई हैं। 12 वर्षीय हिमांशु का सपना लेखक बनने का है। वह कहते हैं कि पुस्तकें लिखूंगा।

कविता

गर्मी से झुलसी धरती ने पुकारा धीरे-धीरे,
चलो कहीं दूर जहां सुकून बसे नदी के तीरे।
धूप की चादर ओढ़े शहर जब थकने लगता है,
मन पहाड़ों की गोद में ठंडी छांव को तरसता है।
पगडंडी पर चलते-चलते बादल संग मुस्कुराते हैं,
हवा के झोंके कानों में मीठे गीत सुनाते हैं।
देवदार की खुशबू मन को हर पल बहलाती है,
झरनों की रुनझुन दिल की धड़कन बन जाती है।
गर्मी की तपिश यहां आकर कहीं खो जाती है,
हर सांस में ठंडक की नई कहानी समाती है।
पहाड़ों की बाहों में सुकून ऐसा मिलता है,
जैसे जीवन फिर से नया-नया सा खिलता है।

सलोनी
कक्षा - सात, कंपोजिट विद्यालय, रामसारी

कविता

अगर खाना है गर्मियों में आम,
तो लगाओ एक पेड़ मां के नाम।
हर घर का बस यही पैगाम,
चलो लगाओ एक पेड़ मां के नाम।
धरती हो जाएगी हरी-भरी तमाम,
आओ लगाएं एक पेड़ मां के नाम।

कनिका
कक्षा - छह, कंपोजिट वियालय रामसारी